

सूत्र २६-३२

काल लोक : अतीत काल के पुद्गल परिवर्तनों का अनन्तत्व

गणितानुयोग ७११

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीओ,
नो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीओ, अणंताओ
ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीओ ।
एवं-जाव-सव्वद्धा^१

प०—पोगलपरियट्ठा णं भंते ! किं संखेज्जाओ ओसप्पिणि-
उत्सप्पिणीओ-जाव अणंताओ ओसप्पिणि-उत्सप्पि-
णीओ ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीओ,
नो असंखेज्जाओ ओसप्पिणि-उत्सप्पिणीओ, अणंताओ
ओसप्पिणीओ ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ३६-३८

तीतद्धाइसु पोगलपरियट्ठाणं अणंतत्तं—

३०. प०—तीतद्धा णं भंते ! किं संखेज्जा पोगलपरियट्ठा,
असंखेज्जा पोगलपरियट्ठा अणंता पोगलपरियट्ठा ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जा पोगलपरियट्ठा, नो असंखेज्जा
पोगलपरियट्ठा अणंता पोगलपरियट्ठा ।
एवं अणागतद्धा वि ।
एवं सव्वद्धा वि ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ३६-४१

अणागतकालस्स अतीतकालओ समयाधिकत्तं—

३१. प०—अणागतद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ तीतद्धाओ,
असंखेज्जाओ तीतद्धाओ, अणंताओ तीतद्धाओ ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ तीतद्धाओ, नो असंखेज्जाओ
तीतद्धाओ, नो अणंताओ तीतद्धाओ ।
अणागतद्धा णं तीतद्धाओ समयाहिया,
तीतद्धाणं अणागतद्धाओ समयूणा ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ४२

सव्वद्धाए अतीतकालओ साइरेगदुगुणत्तं—

३२. प०—सव्वद्धा णं भंते ! किं संखेज्जाओ तीतद्धाओ-जाव-
अणंताओ तीतद्धाओ ?

उ०—गोयमा ! नो संखेज्जाओ तीतद्धाओ-जाव-नो अणंताओ
तीतद्धाओ ।

सव्वद्धा णं तीतद्धाओ साइरेगदुगुणा,
तीतद्धाणं सव्वद्धाओ योवूणए अद्धे ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ४६

उ०—गौतम ! संख्यात अवसप्पिणी और उत्सप्पिणी नहीं हैं ।
असंख्यात अवसप्पिणी उत्सप्पिणी भी नहीं हैं, अपितु अनन्त
अवसप्पिणी उत्सप्पिणी हैं ।

इसी प्रकार सर्वकाल की अवसप्पिणी उत्सप्पिणी हैं ।

प्र०—भगवन् ! पुद्गल परिवर्तनों की अवसप्पिणियाँ और
उत्सप्पिणियाँ संख्यात हैं—यावत्—अनन्त हैं ?

उ०—गौतम ! संख्यात अवसप्पिणियाँ उत्सप्पिणियाँ नहीं हैं,
असंख्यात नहीं हैं, अनन्त हैं ।

अतीत काल के पुद्गल परिवर्तनों का अनन्तत्व—

३०. प्र०—भगवन् ! अतीत काल के पुद्गल परावर्तन क्या
संख्यात थे, असंख्यात थे, या अनन्त थे ?

उ०—गौतम ! संख्यात पुद्गल परिवर्तन नहीं थे, असंख्यात
नहीं थे, अनन्त थे ।

इसी प्रकार अनागत काल के पुद्गल परिवर्तन होंगे ।

इसी प्रकार सर्वकाल के पुद्गल परिवर्तन हैं ।

अतीत काल से अनागत काल का समयाधिकत्व—

३१. प्र०—भगवन् ! अतीत काल से अनागत काल क्या संख्यात
हैं, असंख्यात हैं या अनन्त हैं ?

उ०—गौतम ! अतीत काल से संख्यात नहीं हैं, असंख्यात
नहीं हैं, अनन्त नहीं हैं ।

अतीत काल से अनागत काल एक समयाधिक हैं ।

अनागत काल से अतीत काल एक समय कम हैं ।

अतीत काल से सर्वकाल का कुछ अधिक दुगुणापन—

३२. प्र०—भगवन् ! अतीत काल से सर्वकाल क्या संख्यात हैं ?
—यावत्—अनन्त हैं ?

उ०—गौतम ! अतीत काल से सर्वकाल न संख्यात हैं—
यावत्—न अनन्त हैं ।

अतीत काल से सर्वकाल कुछ अधिक हैं ।

सर्वकाल से अतीत काल कुछ कम हैं ।

३ एकवचन के सूत्र ।

७१२ लोक-प्रज्ञप्ति

काल लोक : अनागत काल से सर्वकाल का कुछ कम दुगुनापन

सूत्र ३३-३६

सर्ववद्वाए अणाययकालओ थोवूणदुगुणत्तं—

अनागत काल से सर्वकाल का कुछ कम दुगुनापन—

३३. प०—सर्ववद्वा णं भंते ! किं सखेज्जाओ अणाययद्वाओ, असखेज्जाओ अणाययद्वाओ, अणंताओ अणाययद्वाओ ?

३३. प्र०—भगवन् ! अनागत काल से सर्वकाल क्या संख्यात हैं, असंख्यात हैं या अनन्त हैं ?

उ०—गोयमा ! नो सखेज्जाओ अणाययद्वाओ, नो असखे-ज्जाओ अणाययद्वाओ, नो अणंताओ अणाययद्वाओ ।

उ०—गौतम ! अनागत काल से सर्वकाल न संख्यात हैं, न असंख्यात हैं और न अनन्त हैं ।

सर्ववद्वा णं अणाययद्वाओ थोवूणदुगुणा ।

अनागत काल से सर्वकाल कुछ कम दुगुना है ।

अणाययद्वा णं सर्ववद्वाओ साइरेगे अद्धे ।

सर्वकाल से अनागत काल कुछ अधिक दुगुना है ।

—भग. स. २५, उ. ५, सु. ४४

पोगलपरियट्टस्स भेया—

पुद्गल परावर्त भेदों का प्ररूपण—

३४. ति विहे पोगलपरियट्टे^१ पणत्ते, तं जहा—

३४. पुद्गल परावर्त तीन प्रकार के कहे गए हैं, यथा—

(१) तीए,

(१) अतीत पुद्गल परावर्त,

(२) पडुप्पप्पे,

(२) वर्तमान पुद्गल परावर्त,

(३) अणायए ।

(३) अनागत पुद्गल परावर्त ।

ठाणं अ. ३, उ. ४, सु. १९७ ।

परमाणु पोगलाणं अणंताणं पोगलपरियट्ट पख्खणं—

परमाणु पुद्गलों के अनन्तानन्त पुद्गल परावर्तों का प्ररूपण—

३५. प०—एएसि णं भंते ! परमाणुपोगलाणं साहणणा^२ भेदाणु-वाएणं अणंताणंता पोगलपरियट्टा^३ समणुगंतव्वा भवतीति मक्खाया ?

३५. प्र०—भगवन् ! इन परमाणु पुद्गलों के संयोग वियोग से अनन्तानन्त पुद्गल परावर्त जानने चाहिए, ऐसा कहा गया है ?

उ०—हंता गोयमा ! एसि णं परमाणुपोगलाणं साहणणा भेदाणुवाएणं अणंताणंता पोगलपरियट्टा समणुगंतव्वा भवतीति मक्खाया ।

उ०—हौं गौतम ! इन परमाणु पुद्गलों के संयोग वियोग से अनन्तानन्त पुद्गल परावर्त जानने चाहिए, ऐसा कहा गया है ।

भग. स. १२, उ. ४, सु. १४

पोगलपरियट्टस्स भेयसत्तग पख्खणं—

पुद्गल परावर्त के सात भेदों का प्ररूपण—

३६. प०—कइविहे णं भंते ! पोगलपरियट्टे पणत्ते ?

३६. प्र०—भगवन् ! पुद्गल परावर्त कितने प्रकार के कहे गये हैं ?

उ०—गोयमा ! सत्तविहे पोगलपरियट्टे पणत्ते । तं जहा—

उ०—गौतम ! पुद्गल परावर्त सात प्रकार के कहे गये हैं । यथा—

१ “पोगलपरियट्टे” ति पुद्गलानां-रूपिद्रव्याणामाहारक वजितानां औदारिकादिप्रकारेण ग्रहणतः एक जीवापेक्षया परिवर्तनं-सामस्त्येन स्पर्शः पुद्गलपरिवर्तः, स च यावता कालेन भवति, स कालोऽपि पुद्गलपरिवर्तः, स च यावता कालेन भवति, स कालोऽपि पुद्गलपरिवर्तः सचानन्तोत्सपणिष्यवसपिणीरूप इति ।

२ “साहणणत्ति” प्राकृतत्वात् संहननम्-संघातः भेदश्च वियोजनम् तयोः अनुपातः योगः संहननभेदानुपातः, तेन सर्वपुद्गलद्रव्यैः सहपरमाणूनां संयोगेन वियोगेन चेत्यर्थः ।

३ “अनन्तेनगुणिता अनन्ता अनन्तानन्ताः ।

एकोऽपि हि परमाणु द्वर्बणुकादिभिरनन्ताणुकान्तैर्द्रव्योः सह संयुज्यमानः अनन्तान् परिवर्तनं लभते, प्रतिद्रव्यं परिवर्तभावात् अनन्तत्वाच्च परमाणूनाम् प्रतिपरमाणु चानन्तत्वात् परिवर्तानां परमाणु पुद्गले परिक्षनिनामन्तत्वं द्रष्टव्यम् पुद्गलैः—पुद्गल-द्रव्यैः सहपरिवर्तः—परमाणूनां मिलनानि पुद्गलपरिवर्तः ।

सूत्र ३६-३८

काल लोक : संवत्सरो की संख्या और उनके लक्षण

गणितानुयोग ७१३

- (१) ओरालिय-पोगलपरियट्टे,
- (२) वेउविय-पोगलपरियट्टे,
- (३) तेया पोगलपरियट्टे,
- (४) कम्मा पोगलपरियट्टे,
- (५) मण पोगलपरियट्टे,
- (६) वइ पोगलपरियट्टे,
- (७) आणुपाणु पोगलपरियट्टे ।

—भग. स. १२, उ. ४, सु. १५

संवत्सराणं संख्या लक्षणं च—

३७. प०—ता कइ णं संवत्सरे ? आहि ए त्ति वएज्जा,

उ०—ता पंच संवत्सरा पणत्ता, तं जहा—

- (१) णक्खत्त संवत्सरे, (१) जुगसंवत्सरे, (३) पमाण-संवत्सरे, (४) लक्खणसंवत्सरे, (५) सण्णित्त-संवत्सरे ।^१ —सूरिय. पा. १०, पाहु. २०, सु. ५४

पंचण्हं संवत्सराणं लक्खणाइं—

गाहाओ—

णक्खत्त संवत्सरं लक्खणं—

३८. समगं णक्खत्ता जोयं जोएत्ति, समगं उडु परिणमंति ।

नच्चुहं नाइसीए, बहु उवए होइ नक्खत्ते ॥१॥

चंदसंवत्सर लक्खणं—

सत्ति समग पुण्णमासि, जोइं ता विसमचारि णक्खत्ता ।

ऊडुओ बहु उदगवओ, तमाहु संवत्सरं चंदं ॥२॥

उडु (कम्म) संवत्सर लक्खणं—

विसमं पवाल्लिणो परिणमंति, अणउसु दिति पुप्पफलं ।

वासं न सम्मवासइ, तमाहु संवत्सरं कम्मं ॥३॥

आइच्च संवत्सर लक्खणं—

पुढवि-दगाणं च रसं, पुप्फफलाणं च देइ आइच्चे ।

अप्पेण वि वासेणं, सम्मं निप्फज्जए सत्सं ॥४॥

अभिवुड्ढिय संवत्सर लक्खणं—

आइच्चतेय तविया, खण-सव-दिवसा उऊ परिणमंति ।

पूरेइ रेणु-थलयाइं, तमाहु अभिवुड्ढिय जाण^२ ॥५॥

—सूरिय. पा. १०, पाहु. २०, सु. ५८

- (१) औदारिक पुद्गल परावर्त,
- (२) वैक्रिय पुद्गल परावर्त,
- (३) तेजस पुद्गल परावर्त,
- (४) कामंण पुद्गल परावर्त,
- (५) मन पुद्गल परावर्त,
- (६) वचन पुद्गल परावर्त,
- (७) श्वासोच्छ्वास पुद्गल परावर्त ।

संवत्सरो की संख्या और उनके लक्षण—

३७. प्र०—संवत्सर कितने कहे हैं ?

उ०—संवत्सर पांच कहे गये हैं, यथा—

- (१) नक्षत्र संवत्सर, (२) युग संवत्सर, (३) प्रमाण संवत्सर, (४) लक्षण संवत्सर, (५) शनैश्चर संवत्सर ।

पाँच संवत्सरो के लक्षण—

गाथार्थ—

नक्षत्र संवत्सर के लक्षण—

३८. जिस संवत्सर में सभी नक्षत्र योग करते हैं और सभी ऋतुएँ परिणमित होती हैं उसमें न अधिक गरमी और न अधिक शरदी होती है किन्तु वर्षा अधिक होती है । वह नक्षत्र संवत्सर है ।

चन्द्र संवत्सर के लक्षण—

जिस संवत्सर की सभी पूर्णिमाओं में चन्द्र विषमचारी नक्षत्रों से योग करे, कडवे पानी की वर्षा अधिक हो उसे चन्द्र संवत्सर कहा है ।

ऋतु (कर्म) संवत्सर के लक्षण—

जिस संवत्सर में (जिस वनस्पति की अंकुरित-पल्लवित होने की जो ऋतु हो उसमें न होकर) अन्य ऋतु में अंकुरित हो, पत्र-पुष्प-फल लगे तथा वर्षा पर्याप्त न हो, उसे ऋतु (कर्म) संवत्सर कहा है ।

आदित्य संवत्सर के लक्षण—

जिस संवत्सर में पृथ्वी, जल, और पुष्प-फलों को रस आदित्य देता है तथा अल्प वर्षा से धान्य पर्याप्त उत्पन्न होता है उसे आदित्य संवत्सर कहा है ।

अभिवर्धित संवत्सर के लक्षण—

जिस संवत्सर में सूर्य के तेज से तप्त क्षण-लव-दिन होने पर सारी पृथ्वी वर्षा के जल से तप्त हो जाती है तथा सभी ऋतुएँ यथासमय परिणमित होती हैं—उसे अभिवर्धित संवत्सर कहा है—ऐसा जानो ।

१ ठाणं अ० ५, उ० ३, सु० ४६० ।

२ (क) ठाणं ५, उ० ३, सु० ४६० ।

(ख) जंबु० वक्ख० ७, सु० १५१ ।